1.

राजा मानसिहं तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय

स्कूल स्तर गायन एवं स्वर वाद्य पाठ्यक्रम

स्वाध्यायी

2020–21

Kala Ratna Diploma in performing art- (K.R.D.P.A.)

Previous

PAPER	SUBJECT VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	Theory - 1 History and Principles of Music theory	100	33
2	Theory - II Essay, Composition and Raga Description	100	33
3	PRACTICAL - I Raga Description Viva	100	33
4	PRACTICAL - II Choice Raga Stage Performance	100	33
	GRAND TOTAL	400	132

Kala Ratna Diploma in Performing Art (K.R.D.P.A.)

पूर्वार्द्ध गायन/स्वरवाद्य

संगीतषास्त्र के सिद्धांत एवं इतिहास

समय 3 घण्टे पूर्णांक : 100

1. पं. शारंगदेव की चतुःसारणा का अध्ययन। बिलावल एवं भैरव थाट में मर्च्छना के आधार से अन्य थाटों की उत्पत्ति।
2. स्वर–प्रस्तार, खण्डमेरू, नष्ट और उद्दिष्ट विधि का अध्ययन।
3. रागांग वर्गीकरण का परिचय। कल्याण, भैरव व तोडी रागांगों का विशेष अध्ययन।
4. घराने का अर्थ एवं महत्व। ख्याल के दिल्ली, ग्वालियर व पटियाला घरानों का परिचय एवं उनकी गायन शैली की विशेषताओं का अध्ययन।
5. वीणा (रूद्रवीणा) का रामपुर घराना, इमदादखानी सितार सुरबहार का घराना एवं हाफिज अली खॉ के सरोद घराने का परिचय।
6. गायन विधा के परिप्रेक्ष्य में तानसेन और उनके वंशजों की शिष्य परम्परा की जानकारी तथा सेनिया घराने के मुख्य कलाकारों का परिचय।
7. विभिन्न प्रकार की बंदिशों एवं गतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
8. काव्य और संगीत तथा छन्द एवं ताल का संबंध।
9. भारतीय संगीत के वाद्यों के वर्गीकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन। रूद्रवीणा, सितार, सुरबहार, सारंगी, शहनाई वाद्यों की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन।

10. सांगीतिक योगदान :– पं. कृष्णराव पंडित, अमीर खॉ (सितार), उस्ताद अल्लारखॉ, पं. पर्वतसिंह, पं. कुदऊ सिंह, विदुषी गंगूबाई हंगल एवं पं. बलवंतराय भट्ट (भावरंग)

Kala Ratna Diploma in Performing Art (K.R.D.P.A.)

पूर्वार्द्ध गायन/स्वरवाद्य
द्वितीय प्रष्न पत्र
निबंध रचना एवं राग विवरण

समय 3 घण्टे पूर्णांक : 100

1. न्यूनतम 600 शब्दों में संगीत विषयक निबंध।
2. दिये गये पद्यांश अथवा वाद्यगत बोल रचना को पाठ्यक्रम के उपयुक्त राग व ताल को चुनकर उसमे निबद्ध करना।
3. पाठ्यक्रम के रागों में आलाप लेखन। तान एवं तिहाइ रचना के साथ।
4. निम्नलिखित रागों का विस्तृत षास्त्रीय विवरण तथा तथा पूर्व पाठ्यक्रमों से समानता रखने वाले रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन :–
   पूरिया कल्याण, अहीर भरैव, मारूबिहाग, बिलासखानी तोड़ी, जोग, श्यामकल्याण, नंद, चन्द्रकौंस, गुर्जरी तोडी, शुद्धसारंग।
5. राग खमाज, पहाडी या धुन।
6. ठुमरी, दादरा, टप्पा, चैती, त्रिवट, चतुरंग आदि गीत प्रकारों का सामान्य परिचय।

Kala Ratna Diploma in Performing Art (K.R.D.P.A.)

पूर्वार्द्ध गायन/स्वरवाद्य
प्रायोगिक :– प्रदर्षन एवं मौखिक

समय –1 घण्टे पूर्णांक : 100

1. पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
2. पाठ्यक्रम के राग पूरिया कल्याण, श्याम कल्याण, मारूबिहाग, बिलासखानी तोडी, जोग, अहीर भरैव, गुर्जरी तोड़ी, नंद, चन्द्रकौंस एवं शुद्धसारंग।
   उपराक्त रागों में से 5 रागों में बडा ख्याल या विलम्बित रचना एवं सभी रागों में मध्यलय की रचना का विस्तृत गायकी या तंत्रकारी सहित प्रदर्शन।
3. राग खमाज, भैरवी, पहाडी अथवा शिवरंजनी में से किसी एक राग में ठुमरी, टप्पा या दादरा का गायन, वाद्य के परीक्षार्थियों द्वारा इन रागों में से किसी एक राग में त्रिताल के अतिरिक्त रचना अथवा धुन का प्रदर्शन।
4. पाठ्यक्रम के रागों में नोम–तोम के आलाप एवं उपज सहित एक ध्रुपद (दुगनु, तिगुन, चौगुन एवं छःगुन सहित), एक धमार (दुगुन, तिगुन, एवं चौगुन सहित)
5. एक तराना अथवा चतुरंग गायकी सहित एवं वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये त्रिताल से भिन्न किन्हीं दो तालों में रचना (आलाप, तान/तोडा सहित) बजाने का अभ्यास एवं प्रदर्शन।
6. अपने वाद्य को मिलाने का अभ्यास अथवा राग पहचान।

Kala Ratna Diploma in Performing Art (K.R.D.P.A.)

पूर्वार्द्ध गायन / स्वरवाद्य

प्रायोगिक :– 2 मंच प्रदर्षन

समयः– 45 मिनिट पूर्णांक : 100

1. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से किसी एक राग का प्रदर्शन ।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से परीक्षक द्वारा दिये गये पांच रागों में से किसी एक राग की प्रस्तुति।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से किसी एक राग में ठुमरी, टप्पा, तराना, त्रिवट, चतुरंग अथवा धुन का प्रदर्शन।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – पं. श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र पराजंपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11. संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवागंन
12. भारतीय संगीत का इतिहास – श्री उमेश जोशी
13. निबंध संगीत – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
14. निबंध संगीत – श्री आर. एन. अग्निहोत्री
15. तन्त्री वादन की वादन कला – डॉ. प्रकाश महाडिक

Kala Ratna Diploma in performing art- (K.R.D.P.A.)

Final

PAPER	SUBJECT VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	Theory - 1 History and Principles of Music theory	100	33
2	Theory - II Essay, Composition and Raga Description	100	33
3	PRACTICAL - I Raga Description Viva	100	33
4	PRACTICAL - II Choice Raga Stage Performance	100	33
	GRAND TOTAL	400	132

Kala Ratna Diploma in Performing Art (K.R.D.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

षास्त्र –प्रथम प्रष्न–पत्र

संगीतषास्त्र के सिद्धांत एवं इतिहास

समय 3 घण्टे पूर्णांक : 100

1. श्रुति और स्वर का संबंध। प्रमाण श्रुति का अध्ययन। स्वर संवाद, स्वर अंतराल का अध्ययन।
2. जाति की परिभाषा व सामान्य अध्ययन। प्राचीन दशाविध राग वर्गीकरण (ग्राम राग आदि),
3. राग रागिनी पद्धति का परिचय। थाट राग वर्गीकरण का आलोचनात्मक विवेचन।
4. सारंग, मल्हार तथा कान्हडा रागांगों का विशेष अध्ययन।
5. वर्तमान सदंर्भ में घरानों का औचित्य। ख्याल के आगरा, किराना तथा जयपुर घरानों का परिचय एवं उनकी गायन शैलियों का अध्ययन।
6. बाबा उस्ताद अलाउद्दीन खॉ का मैहर (सितार एवं सरोद घराना), उस्ताद मुश्ताक अली खॉ का सितार घराने का सामान्य परिचय।
7. आधुनिक वृन्दगान एवं वृन्दवादन की जानकारी। (भारतीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में)
8. सरोद, संतूर, विचित्रवीणा, तानपुरा, बेला, बासुंरी वाद्यों की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन।
9. आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों का परिचय एवं उनकी उपयोगिता।
10. सौंदर्य शास्त्र की दृष्टि से राग एवं रस का पारस्परिक संबंध।
11. पं. रातजनकर, पं. भीमसेन जोशी, उस्ताद अमीर खॉ, पं. कुमार गधंर्व, उस्ताद अब्दुल हलीम जाफर खॉ, पं. हरिप्रसाद चौरसिया, पन्नालाल घोष, पं. वी. जी. जोग, डॉ ए.न. राजम् का जीवन परिचय तथा उनका सांगीतिक योगदान।

Kala Ratna Diploma in Performing Art (K.R.D.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

शास्त्र–द्वितीय प्रश्न–पत्र

निबंध रचना एवं राग विवरण

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

1. न्यूनतम 600 शब्दा में सगीत विषयक निबंध।
2. दिये गये पद्यांष अथवा वाद्यगत वाले रचना को पाठ्यक्रम से उपयुक्त राग व ताल को चुनकर उसमें निबद्ध करना।
3. पाठ्यक्रम के रागों में आलाप एवं तान लेखन।
4. अंकों के माध्यम से विभिन्न लयकारियों को तालिपि में लिखने का ज्ञान। प्रचलित तालों को डढ गुन (3/2), पौन गुन (3/4), सवा गुन (5/4) इन लयकारियों में लिखने का अभ्यास।
5. निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय विवरण तथा पूर्व पाठ्यक्रमों में समानता रखने वाले रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन। दरबारी कान्हडा, आभोगी कान्हडा, नायकी कान्हडा, मियॉ की मल्हार, मध्यमादी सारंग, रागेश्री, जागेकौंस, मधुवंती, देवगिरी बिलावल, एवं भटियार।

Kala Ratna Diploma in Performing Art (K.R.D.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिकः–1 राग परिचय प्रदर्षन एवं मौखिक

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

1. पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
2. निम्नलिखित रागों में से किन्हीं 5 रागों में एक बडा ख्याल या विलम्बित रचना तथा सभी रागों में छोटा ख्याल या मध्य लय की रचना (विस्तृत गायकी या तंत्रकारी सहित प्रदर्शन)।
   दरबारी कान्हडा, आभोगी कान्हडा, नायकी कान्हडा, मियॉ की मल्हार, मध्यमादी सारंग, रागेश्री, जोगकौंस, मधुवंती, देवगिरी बिलावल, एवं भटियार।
3. राग देस, तिलंग, भैरवी एवं पीलू में से किसी एक राग में ठुमरी या टप्पा (गायन के विद्यार्थियों के लिये) तथा इन्हीं रागों में से किसी एक राग में धुन का प्रदर्शन (वाद्य के विद्यार्थियां के लिये)
4. पाठ्यक्रम के रागों में नोम–तोम के आलाप उपज सहित एक ध्रुपद (दुगनु, तिगुन, चौगुन एवं छःगुन सहित),
5. पाठ्यक्रम के रागों में अन्य दो तालों में रचनाओं का आलाप तान सहित गायन एवं वादन।
6. एक तराना अथवा त्रिवट गायकी सहित।
7. अपने वाद्य को मिलाने का अभ्यास अथवा राग पहचान।

Kala Ratna Diploma in Performing Art (K.R.D.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिक :–. 2 मंच प्रदर्शन पसंदीदा राग

समय : 45 मिनिट पूर्णांक : 100

1. निर्धारित पाठ्यक्रम में से परीक्षार्थी द्वारा किसी एक राग का अपनी इच्छानुसार बडा ख्याल अथवा विलम्बित अथवा मसीतखानी गत की रचना का प्रदर्शन। (विस्तृत गायकी/तंत्रकारी सहित)
2. परीक्षक द्वारा दिये गये पॉच रागों में से किसी एक राग की प्रस्तुति।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से किसी एक राग में ठुमरी, दादरा अथवा धुन का प्रदर्शन

संदर्भ ग्रथं

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. सगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. सगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी –श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 –पं. श्री रामाश्रय झा
7. सगीत बोध –श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण –श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे सगीत रत्न –श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग –श्री सज्जनलाल भट्ट
11. सगीत शास्त्र –श्री तुलसीराम देवांगन
12. भारतीय सगीत का इतिहास –श्री उमेश जोशी
13. निबंध सगीत –श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
14. निबंध सगीत –श्री आर. एन. अग्निहोत्री
15. तन्त्री वादन की वादन कला – डॉ. प्रकाश महाडिक